The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 2 | Issue 11 | November 2024
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

रूस यूक्रेन युद्ध के दौर में भारत और रूस के मध्य राजनीतिक संबंध : अवसर व चुनौतियाँ

प्रीती गौड़
शोधार्थिनी, राजनीति शास्त्र विभाग, मेरठ कॉलेज, मेरठ
Research Scholar at Department of Political Science, Meerut College, Meerut
Email id –pritigaur7310@gmail-com

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Keywords:

युद्ध, राष्ट्रीय हित, कूटनीति, विदेशनीति, राष्ट्रीय सुरक्षा, राजनीतिक संबंध

DOI:

10.5281/zenodo.14329007

ABSTRACT

गौरतलब है कि भारत और रूस ऐतिहासिक दौर से ही एक दूसरे के सबसे भरोसेमंद और करीबी मित्र देश रहे है लेकिन भारत कभी भी युद्ध का समर्थक देश नहीं रहा, भारत शुरुआत से ही किसी दो देश के आपसी मतभेद को द्विपक्षीय कूटनीतिक वार्ता से सुलझाने का सुझाव देता आ रहा है। रूस यूक्रेन युद्ध ने भारत की विदेश नीति की दिशा और दशा दोनों ही बदल दिया। एक तरफ भारत का सबसे भरोसेमंद मित्र देश रूस तो दूसरी तरफ अमेरिकी समर्थक यूक्रेन के बीच विवाद ने भारत को संकट की स्थिति में डाल दिया। वर्तमान समय में रूस और पश्चिमी देशों के साथ भारत के अच्छे संबंध है ऐसी परिस्थिति में किसी एक देश के साथ अपने संबंध को सुदृढ़ करना दूसरे देश के साथ विवाद पैदा कर सकता है। पंचशील सिद्धांतों का पालन करने और संयुक्त राष्ट्र संघ चार्टर में विश्वास करने वाला भारत देश किसी भी ऐसे सैनिक गुट का समर्थन नहीं करता है जो अपने स्वार्थ हित पर टीका हो इस दृष्टि से भारत शीत युद्ध के समय से ही सैनिक गुट नाटो, सेंटो, वारसा जैसे संगठनों से दूर रहकर गुटनिरपेक्षता की नीति अपनाई, इसी नीति को अपनाते हुए फरवरी 2022 में शुरू रूस यूक्रेन युद्ध के दौरान भारत ने रूस बनाम यूक्रेन गुटबन्दी से दूर रहा। हालांकि भारत के लिए इस नीति का पालन करते हुए वैश्विक व्यवस्था के साथ तालमेल बिठाकर चलना कई चुनौतियाँ उत्पन्न कर रही है क्योंकिवर्तमान परिस्थितियाँ शीत युद्ध से बिल्कुल भिन्न है, भारत स्वयं एक महाशक्ति के रूप उभरता हुआ सबसे बड़ा आबादी वाला लोकतान्त्रिक देश है जिस पर विश्व के सभी

देशों की नजरेटिकी हुई है कि वह इस युद्ध को लेकर कोई बड़ा कदम उठाएगा। भारत पर अमेरिका सहित कई युरोपियन देशों का भारी दबाव पड़ा कि वह रूस के इस हमले के विरुद्ध पारित प्रस्ताव और आलोचनाओं में खुलकर भाग ले, लेकिन भारत ने ना तो मतदान में भाग लिया और ना ही रूस की प्रत्यक्षतः आलोचना की। भारत ने अपने राष्ट्रीय हित को ध्यान में रखते हुए इस युद्ध के दौरान भी रूस के साथ अपने ऐतिहासिक मित्रता को निभाते हुए राजनीतिक और व्यापारिक संबंध को जारी रखा।लेकिन सामान्य परिस्थितियों की अपेक्षा इस घटनाक्रम में रूस के साथ भारत के राजनीतिक और व्यापारिक संबंधों में काफी उतार चढ़ाव देखा गया जहां एक तरफ भारत रूस के साथ द्विपक्षीयव्यापार में निर्यात से ज्यादा आयात किया वहीं दूसरी तरफ राजनीतिक संबंध को लेकर भारत–रूस वार्षिक शिखर सम्मेलन के आपसी बैठकों पर विराम लग गया जिससे दोनों देशों के राजनीतिक संबंधों में कोई खास वृद्धि नहीं देखी गई क्योंकि वर्ष 2022 व 23 के दौरान दोनों देशों के मध्य जो भी बैठके व टेलीफोन वार्ताएं हुई वो या तो रूस यूक्रेन युद्ध समाप्ति, शांति बहाल करने या पिछले वर्षों में हुई समझौते की प्रगति की समीक्षा करने के आस पास घूमती रही साथ ही भर रूस के साथ कोई नई पहल करने के बजाय आपसी सबंधों को स्थायित्व प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित किया इन दो वर्षों (2022–23) में शीर्ष नेताओं की मुलाकात मात्र एक बार एस.सी.ओ. शिखर सम्मेलन में हुई थी उसके बाद से दोनों देशों में मध्य वार्तालाप विदेश मंत्रियों व राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकारों के हवाले कर दिया गया।दो वर्षों के लंबे अंतराल के बाद अंततः जुलाई 2024 में 22वां भारत–रूस शिखर सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें कई महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा तो हुई लेकिन रक्षा उपकरण को लेकर कोई नया समझौता नहीं हुआ जो भारतीय सीमा सुरक्षा के लिए अनिवार्य है। लेकिन गहनता से विश्लेषित किया जाए तो पाया जाता है कि इस युद्ध के दौर में भी भारत रूस के मध्य संबंध स्थिर बने हुए है, इस दृष्टि से विदेश मंत्री जयशंकर ने कहा कि ''दुनिया के सबसे स्थिर संबंधों में 'भारत–रूस संबंध' है'' (अलक्सई जखारोव,) इसी स्थिरता को कायम रखने के लिए दोनों देशों ने किसी ना किसी रूप में निरंतर वार्ताएं जारी रखा।

इस शोध अध्ययन के मुख्य उद्देश्य–

- भारत और रूस के मध्य वर्षों से चले आ रहे सौहार्दपूर्ण संबंधों को रूस यूक्रेन युद्ध के दौर भारत ने रूस के साथ अपने राजनीतिक संबंधों को कैसे संचालित किया जिससे दोनों देशों के राजनीतिक संबंधों पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभाव न्यूनतम रहे।
- युद्ध के दौरान भारत द्वारा अपनाई गई विदेशनीति और उसकी कूटनीतिक सफलता का अध्ययन करना।
- भारत के समक्ष मौजूद अवसर व चुनौतियों का अध्ययन करना।

युद्ध के प्रति भारत के दृष्टिकोण तथा शांति स्थापना के लिए भारत के द्वारा किए गए प्रयासों का भी अध्ययन करना, शामिल ळें

परिचय–

रूस यूक्रेन युद्धने पूरे विश्व को शीत युद्ध के समान पुनः दो गुटों में विभाजित कर दिया एक तरफ रूस समर्थित देश (चीन, उत्तर कोरिया, ईरान) तो दूसरी तरफ यूक्रेन समर्थक देश (अमेरिका, फ्रांस, ब्रिटेन, कनाडा)।शीत युद्ध के दौरान औपनिवेशिक सत्ता से स्वतंत्र नवनिर्मित भारत के पास यह विकल्प था की वह किसी भी गुट (साम्यवादी और पूंजीवादी) में शामिल हो सकता है लेकिन भारत ने ऐसा ना करके गुट निरपेक्षता की नीति अपनाते हुए विश्व में अपनी एक अलग पहचान बनाये रखने में कामयाब रहा तथा अनेक देशों के साथ अपने संबंधों को मजबूत भी किया। 21वीं सदी का युग वैश्वीकरण का युग है जिसके मकड़जाल में पूरा विश्व फंसा हुआ है ऐसे हालात में किसी एक देश के साथ जुड़कर अपने राष्ट्रीय हित को प्राप्त नहीं किया जा सकता। रूस यूक्रेन युद्ध की वजह से पूरा विश्व वैश्विक अस्थिरता के दौर से गुजर रहा है यह युद्ध ना सिर्फ रूस, यूक्रेनऔर विश्व के अन्य देशों के आपसी राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संबंधों को प्रभावित किया बल्कि पर्यावरण, खाद्य असुरक्षा, विस्थापन और मानवाधिकार जैसे समस्याओं को भी जन्म दिया इसके पीछे कौन कितना जिम्मेदार है, रूस यूक्रेन के अलावा विश्व के विभिन्न देशों के अपने–अपने दृष्टिकोण है।सोवियत संघ के विघटन के फलस्वरूप रूस के बाद यूक्रेन सबसे बड़ा शक्तिशाली देश रहा रूसी नेता के अनुसार–रूस और यूक्रेन एक दूसरे के साथ सीमा साझा करते है यूक्रेन रूस के लिए ना सिर्फ भू–राजनीतिक दृष्टि से अपितु यह आर्थिक, व्यापारिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है जिसकारण से यूक्रेन का पश्चिमी देशों की तरफ झुकाव बढ़ते देख रूस को खतरा महसूस होने लगा था रूस नहीं चाहता था कि यूक्रेन पश्चिमी सैनिक संगठन 'नाटो' में शामिल हो यदि वह नाटो में शामिल हो जाता है तो रूस के सीमा के पास युरोपियन देशों का हस्तक्षेप बढ़ जाएगा इसके अलावा यूक्रेन, रूस और युरोपियन देशों के बीच बफर जोन का काम करता है रूस नाटो देश से यह आश्वासन चाहता था कि वह यूक्रेन को नाटो संगठन में शामिल ना करे साथ ही पूर्वी यूरोप– पोलैंड, एस्टोनिया, लातविया और लिथुआनिया से अपनी सेना वापस बुला

ले,लेकिन अमेरिका सहित पश्चिमी देश रूस को ऐसा कोई आश्वासन नहीं दिया यही मुख्य कारण रूस और यूक्रेन को युद्ध में धकेल दिया।

भारत रूस संबंध–

विश्व के सबसे व्यापक लोकतांत्रिक देश भारत के साथ रूस का संबंध आजादी के बाद से ही मधुर रहे है रूस के प्रति भारत का झुकाव देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू के समाजवादी नीतियों से ही शुरू हो गई थी क्योंकि रूस एक समाजवादी देश था हालांकि रूस और भारत के समाजवादी नीतियों में भिन्नता पाई जाती है फिर भी इन दोनों देशों के आपसी संबंध निरंतर प्रगाढ़ होते चले गए इन दोनों देशों के आपसी सहयोगात्मक संबंध को कुछ महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं से समझा जा सकता है– 1955 में रूस के नेता निकिता ख्रुश्चेव भारत यात्रा पर कहा कि भारत और रूस इतने करीबी दोस्त है कि ''यदि भारत पर्वत की चोटियों से रूस को आवाज देगा रूस तुरंत उपस्थित होगा'' [आज तक न्यूज, 8 जुलाई 2024] रूस के इस बयान की सत्यता साबित भी हुई पहली घटना– 1957 को संयुक्त राष्ट्र संघ में कश्मीर मुद्दे को ब्रिटेन, अमेरिका, क्यूबा, आस्ट्रेलिया ने मिलकर अंतर्राष्ट्रीयकरण करने की कोशिश की सोवियत संघ एकमात्र सुरक्षा परिषद का स्थायी सदस्य था जिसने इस मुद्दे को भारत के पक्ष में मोड दिया, दूसरी घटना 1961 के दौर में भारत ने गोवा को पुर्तगाल से आजाद कराने के लिए भारतीय सेना को भेजा जिसका पूरे पश्चिमी देशों ने विरोध किया और संयुक्त राष्ट्र संघ में एक प्रस्ताव पेश किया कि भारतीय सेना वापस जाए और गोवा को पुर्तगाल के अधीन कर दे उस दौरान रूस ने इस प्रस्ताव पर वीटो कर भारत का साथ दिया ऐसे ही तीसरी सबसे महत्वपूर्ण घटना जिसमें रूस ने भारत का साथ दिया 3 दिसंबर 1971 के भारत पाकिस्तान युद्ध में विश्व के सबसे शक्तिशाली देश अमेरिका और ब्रिटेन पाकिस्तान का साथ दे रहे थे उस दौरान भारत रूस मैत्री सहयोग संधि (9 अगस्त 1971) के तहत रूस ने भारत का साथ दिया जिसके उपरांत अमेरिका को पीछे हटना पड़ा और पाकिस्तान की हार में 93 हजार सैनिक आत्मसमर्पण कर दिए।रूस ना सिर्फ भारत की कूटनीतिक सहायता की बल्कि भारतीय सुरक्षा उपकरणों को विकसित करने में भी मदद की (जैसे सुखोई, ब्रह्मोस और KA–2260 हेलिकॉप्टर) 1960 के उस दशक में रूस भारत को सैन्य सहायक सामग्री प्रदान किया जब पूरे पश्चिमी देश भारत को हथियार देने से मना कर दिया था, ऐसे कई क्षेत्रों में रूस भारत की सहायता की और आगे भी करता चला आ रहा है 1991 में सोवियत संघ से विघटन के पश्चातरूस की घटती शक्ति और समझौतावादी दृष्टिकोण ने पूरे विश्व को एक ध्रुवीय व्यवस्था (अमेरिका के छत्रछाया में) के नीचे ला दिया भारत भी धीरे धीरे अमेरिका की तरफ झुकने लगा लेकिन भारत ने रूस के खिलाफ कभी ना जाते हुए अपनी दोस्ती बरकरार रखी।उदाहरण स्वरूप –

- 1993 – भारत ने रूस के साथ एक नई संधि 'मैत्री और सहयोग संधि' की।
- 1994 – भारत रूस के मध्य 'द्विपक्षीय सैन्य तकनीक समझौता' हुआ।

- 2000 – रूस के राष्ट्राध्यक्ष भारत यात्रा पर आए, भारत के प्रधानमंत्री अटल विहारी वाजपेयी और रूस के राष्ट्रपति ब्लादिमीर पुतिन दोनों मिलकर अपने पुराने दोस्ती को पुनर्जीवित करने के लिए 'रणनीतिक साझेदारीघोषणा' पत्र पर हस्ताक्षर किए साथ ही दोनों देशों ने यह स्पष्ट किया की हम सिफ4 आर्थिक क्षेत्र में साझेदार नहीं अपितु विकासात्मक और रक्षात्मक मूल्यों के भी साझेदार है। वर्ष 2000 से भारत और रूस के मध्य भारत–रूस वार्षिक शिखर सम्मेलन का आयोजन शुरू हुआ। भारत और रूस के राजनीतिक संबंधों के लिए यह वार्षिक शिखर सम्मेलन सबसे महत्वपूर्ण मानी जाती है क्योंकि यह दोनों देशों के लिए सर्वोच्च संस्थागत वार्तालाप मंच प्रदान करता है। जिसमें दोनों देश के राष्ट्राध्यक्ष भाग लेते है साथ ही भारत और रूस के रणनीतिक साझेदारी के तहत सहयोगात्मक गतिविधियों पर निरंतर वार्तालाप और कार्यक्रमों को आगे बढ़ाने के लिए राजनीतिक और आधिकारिक मंत्रालय स्तरपर दो अंतर सरकारी आयोग बनाए गए। पहले आयोग में भारत के विदेश मंत्री और रूस के उप प्रधानमंत्री भाग लेते है जिसमें व्यापार, अर्थव्यवस्था, विज्ञान, तकनीक, एवं सांस्कृतिक स्तर पर सहयोग की जाती है, दूसरे आयोग में दोनों देशों के रक्षा मंत्री भाग लेते है जिसमें सैन्य एवं तकनीकी सहयोग पर बातचीत की जाती है। प्रतिवर्ष आयोजित होने वाली भारत–रूस वार्षिक शिखर सम्मेलन दोनों देशों के मध्य रक्षा, ऊर्जा, नाभकीय परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण प्रयोग, प्रौद्योगिकी, विज्ञान, व्यापार, अंतरिक्ष, राजनयिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में होने वाले सहयोग को उच्च स्तर तक पहुंचा दिया, इसके अलावा समसामयिक उभरती चुनौतियां जैसे आतंकवाद, पर्यावरण, साइबर सुरक्षा से निपटने के लिए एक साथ सहयोग करने के हेतु दोनों देशप्रतिबद्ध हुए।

रूस यूक्रेन युद्ध के दौरान भारत और रूस के राजनीतिक संबंध–

अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में देशों के बीच विभिन्न प्रकार संबंध पाए जाते है– राजनीतिक, आर्थिक, व्यापारिक, सांस्कृतिक। उन सभी में से राजनीतिक संबंध सबसे अहम होती है। किसी भी देश का किसी अन्य देश के साथ विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग और प्रगति उस देश के राजनीतिक संबंधों पर निर्भर करता है क्योंकि देश के सर्वोच्च अधिकारी व नेता चाहे वह वंशानुगत हो या निर्वाचित, ही यह निर्धारित करता है कि वह किस देश के साथ संबंध रखेगा और किस देश के साथ नहीं।

भारत और रूस के मध्य राजनीतिक संबंध वर्ष 2021 तक निर्बाध रूप से निरंतर व्यापक होते चले गए लेकिन फरवरी 2022 में शुरू हुए रूस यूक्रेन युद्ध के कारण दोनों देशों के मध्य शीर्ष राजनीतिक वार्ता बाधित हो गए इतना ही नहीं पिछले वर्ष (2021) दोनों देशों में मध्य हुई समझौते कुछ तो बीच में ही बाधित हो गए तो कुछ अमल में ही नहीं आए जैसे 10 वर्षीय रक्षा कार्यक्रम, अनुसंधान व विकास, रक्षा उपकरण उत्पादन व आयात, सैन्य अभ्यास और 22 वार्ता आयोजन प्रस्ताव लेकिन एक आशाजनक वृद्धि व्यापार के क्षेत्र में हुआ जो निर्धारित 30

बिलियन डॉलर द्विपक्षीय व्यापार के लक्ष्य को पूरा कर लिया हालांकि इससे भारत को काफी व्यापारिक घाटा हुआ फिर भी भारत रूस के साथ अपने ऐतिहासिक सबंधों को स्थिर बनाए रखने में कामयाब रहा।

भारत और रूस के मध्य फरवरी 2022 से जुलाई 2024 तक हुए कुछ महत्वपूर्ण बैठक व वार्ता–

16 सितंबर 2022 उज्बेकिस्तान के समरकन्द में आयोजित संघाई सहयोग सम्मेलन (एससीओ) में भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी रूस के राष्ट्राध्यक्ष ब्लादिमीर पुतिन से व्यक्तिगत तौर पर मुलाकात कीऔर यह निर्णय लिया कि इस कठिन परिस्थिति में दोनों देश अपने द्विपक्षीय सहयोग पर हुई प्रगति की समीक्षा करने तथा वैश्विक व क्षेत्रीय मुद्दों पर (वैश्विक खाद्य सुरक्षा, ऊर्जा सुरक्षा और उर्वरक उपलब्धता) विचार विमर्श करने हेतु टेलीफोन के माध्यम से नियमित संपर्क बनाए रखेंगे। (भारत–रूस द्विपक्षीय संबंध, एम्बेसी ऑफ इंडिया मास्को, रूस, जून 2024)

2022 (31 मार्च – 1 अप्रैल) को रूस के विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव भारत यात्रा पर आए। दोनों मंत्रियों ने सहयोग के समग्र स्थिति का आकलन करते हुए व्यापारिक और आर्थिक संबंधों पर हाल के घटनाक्रमों के निहितार्थो पर चर्चा किएसाथ ही विदेश मंत्री जयशंकर ने कहा कि "एक विकासशील अर्थव्यवस्था के लिए विभिन्न क्षेत्रों में वैश्विक अस्थिरता भारत के दृष्टि में एक चिंता का विषय है दोनों देशों के लिए यह अपरिहार्य है कि उनके आर्थिक, तकनीकी और लोगों के बीच संपर्क निरंतर बने रहे। भारत के विदेश मंत्री ने यूक्रेन मुद्दे पर बातचीत करते हुए हिंसा को रोकने और मतभेद को तत्काल समाप्त करने के दृष्टि से कूटनीतिक वार्ता को महत्व दिया। भारत के विदेशमंत्री ने कहा कि हमें किसी भी विवाद को अंतर्राष्ट्रीय कानूनों, संयुक्त राष्ट्र चार्टर, संप्रभुता और राज्यों की क्षेत्रीय अखंडता को ध्यान में रखकर सुलझाना चाहिए। (रूस संघ के विदेशमंत्री का भारत यात्रा, ऐम्बसी ऑफ इंडिया मास्को, रूस 1 अप्रैल 2022)

नवंबर 2022 में भारत के विदेश मंत्री मास्को की यात्रा की जिसमें व्यापार, आर्थिक, वैज्ञानिक, तकनीकी, और सांस्कृतिक पर भारत–रूस अंतर–सरकारी आयोग भी शामिल हुए भारत और रूस ने द्विपक्षीय व्यापार और आर्थिक संबंधों को दीर्घकालिक स्थिरता प्रदान करने के लिए 30 बिलियन डॉलर के द्विपक्षीय व्यापारिक लक्ष्य को प्राप्त करने के दिशा में इच्छा व्यक्त की साथ ही व्यापारिक घाटो और बाजार पहुँच के मुद्दे को हल करने के विषय पर बातचीत भी किए। दोनों मंत्रियों ने आपसी द्विपक्षीय सहयोग को समसामयिक, संतुलित, पारस्परिक रूप से लाभकारी, स्थायी और दीर्घकालिक बनाने के साझा उद्देश्यों पर सहमति वक्त की (भारत के विदेश मंत्री का रूस दौरा, ऐंम्बसी ऑफ इंडिया मास्को, रूस 8 नवंबर 2022)

6 मार्च 2023 आईआईआरजीसी–टीईसी (व्यापार, आर्थिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक सहयोग पर भारत–रूस अंतर–सरकारी आयोग) की वर्चुअली बैठक हुई जिसमें व्यापार घाटे और बाजार पहुँच के मुद्दे के समाधान सहित भारत–रूस द्विपक्षीय आर्थिक संबंधों को और अधिक मजबूती प्रदान करने के उद्देश्य से मिलकर काम करने हेतु सहमत हुए (मिनिस्ट्री ऑफ इक्स्टर्नल अफेयर, गवर्नमेंट ऑफ इंडिया, न्यू दिल्ली (6 मार्च 2023)

दिसंबर 2023 को भारत के विदेश मंत्री जयशंकर रूस केपाँच दिवसीय यात्रा पर गए यह यात्रा इस दृष्टि से खास हो जाती है क्योंकि रूस के राष्ट्रपति अपने प्रोटोकॉल को दरकिनार कर भारत के विदेश मंत्री से मुलाकात की जबकि यह माना जाता है की रूस के राष्ट्राध्यक्ष सिर्फ अपने समकक्ष राष्ट्राध्यक्ष से ही मुलाकात करते है रूस के राष्ट्रपति और भारत के विदेशमंत्री के बीच अर्थव्यवस्था, ऊर्जा, रक्षा तथा लोगों के बीच संपर्क व सांस्कृतिक आदान प्रदान पर बातचीत हुई साथ ही कुडनकुलम परमाणु ऊर्जा संयंत्रों से संबंधित तीन दस्तावेजों, फार्मास्युटिकल और स्वास्थ्य सेवा में सहयोग पर समझौता हुआ और तकनीकी क्षेत्रों में तीव्रता लाने हेतु मिलकर कार्य करने पर आशा वक्त की। रूस के राष्ट्राध्यक्ष व्लादिमर पुतिन ने भारत के प्रधानमंत्री को आगामी रूस यात्रा के लिए आमंत्रित किया। (भारतीय विदेश मंत्री की रूस यात्रा, मिनिस्ट्री ऑफ इक्स्टर्नल अफेयर 30 दिसंबर 2023, न्यू दिल्ली)

भारत–रूस वार्षिक शिखर सम्मेलन 2024 –रूस यूक्रेन विवाद के शुरुआत से बीते दो वर्षों (2022 और 2023)में भारत–रूस वार्षिक शिखर सम्मेलन का आयोजन दोनों देशों के मध्य नहीं हो पाया इसके पीछे का मुख्य कारण वैश्विक अस्थिरता और बैठक के लिए समय सीमा निर्धारित ना हो पाना लेकिन जुलाई 2024 में 22वां भारत–रूस वार्षिक शिखर सम्मेलन रूस में आयोजित किया गया इस सम्मेलन का उद्देश्य मौजूदा भू–राजनीतिक तनावों को ध्यान में रखते हुए दोनों देशों के बीच रणनीतिक साझेदारी को और मजबूत करना जिसको लेकर भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और रूस के राष्ट्रपति पुतिन के बीच कई मुद्दे पर वार्तालाप हुआऔर 9 समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर भी हुए। इस सम्मेलन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को रूस के राष्ट्रपति पुतिन रूस के सर्वोच्च नागरिक सम्मान पुरस्कार "ऑर्डर ऑफ सेंट एंड्रयू द एपोस्टल से सम्मानित किया।

दोनों देश के राष्ट्राध्यक्ष ने अपने द्विपक्षीय सहयोग (आंतरिक, शिक्षा, सांस्कृतिक और मानवीय सहायता) को लेकर हुई प्रगति पर एक दूसरे की तारीफ की और कहा कि आने वाले समय में हम दोनों देश संतुलित एवं पारस्परिक रूप से लाभकारी, स्थायी और दीर्घकालिक साझेदार बनने का प्रयास करेंगे। पिछले दो वर्षों के जटिल भू–राजनीतिक परिस्थितियों में विदेश मंत्रियों के बीच लगातार बैठकों, एक दूसरे के हितों के मध्य घनिष्ठ जुड़ाव की, दोनों राष्ट्राध्यक्षो ने प्रशंसा की और 2023 में विदेश मंत्रियों के बीच हस्ताक्षरित '2024–28' की अवधि के लिए 'विदेश कार्यालय परामर्श पर प्रोटोकॉल' का स्वागत किया जो सबसे महत्वपूर्ण द्विपक्षीय, वैश्विक और क्षेत्रीय मुद्दों पर विचार आदान प्रदान तथा संवाद की नीव रखता है।

द्विपक्षीय व्यापार और निवेश को बढ़ावा देने के लिए आर्थिक क्षेत्र में 2030 तक 100 अमेरिकी बिलियन डॉलर का द्विपक्षीय व्यापार करने का लक्ष्य रखा गया साथ ही आर्थिक सहयोग को उच्च स्तर तक बढ़ावा देने के लिए एक व्यापक "कार्यक्रम 2030" तैयार करने पर सहमति बनी इस कार्यक्रम का समन्वय भारत–रूस अंतर–सरकारी व्यापार, आर्थिक, वैज्ञानिक, तकनीक और सांस्कृतिक सहयोग, आयोग द्वारा किया जाएगा। दोनों पक्षों ने राष्ट्रीय मुद्राओं का उपयोग करके द्विपक्षीय निपटान प्रणाली को बढ़ावा देने हेतु मिलकर काम करने पर सहमति

जताई राष्ट्रपति पुतिन और प्रधानमंत्री मोदी ने मेक इन इंडिया और आत्मनिर्भर भारत कार्यक्रमों में रूसी कंपनियों की भागीदारी और रूस में के निवेश परियोजनाओं में भारतीय कंपनियों की भागीदारी को सुविधापूर्ण बनाने के लिए हेतु सहमति व्यक्त की। इसी तरह भारत और रूस के मध्य यूरेशियन आर्थिक संघ के बीच वस्तुओं पर मुक्त व्यापार, सेवा और निवेश में द्विपक्षीय मुक्त व्यापार पर समझौते तथा रक्षा और प्रौधयोगिकी में संयुक्त अनुसंधान विकास के लिए वार्ता हुए। यह शिखर सम्मेलन दोनों देशों के मध्य राजनयिक सम्मान और उच्च आर्थिक लक्ष्य ने रणनीतिक साझेदारी को और अधिक मजबूत किया। मौजूद वैश्विक भू–राजनीतिक चुनौतियों के बावजूद दोनों देशों ने विकास व सहयोग के लिए अपनी–अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि की। (पीआईबी,न्यू दिल्ली, 2024) इस वार्षिक शिखर सम्मेलन को लेकर यूक्रेन के राष्ट्रपति जेलेन्सकी ने कहा कि "विश्व के सबसे बड़े लोकतान्त्रिक देश के नेता दुनिया के सबसे खूनी अपराधी पुतिन को गले लगाना भारी निराशा और शांति के प्रयासों को बड़ा झटका है" (कार्तिक बोम्माकान्ति)

भारत और रूस के मध्य हुई बैठक/वार्तालाप

वर्ष – 2022

दिनांक	शामिल पक्ष	वर्ग	वार्ताएं
24 फरवरी	मोदी+पुतिन जयशंकर+लावरोव	टेलीफोन वार्ता	यूक्रेन मुद्दे, युद्ध समाप्ति और भारतीय छात्रों के देश वापसी के लिए अपील
2 मार्च	मोदी+पुतिन	टेलीफोन	भारतीय छात्रों के देश वापसी के संबंध में
7 मार्च	मोदी+पुतिन	टेलीफोन	भारतीय छात्रों को लेकर और यूक्रेन शांति वार्ता
31मार्च–1अप्रैल	सर्गेई+जयशंकर मोदी+सर्गेई	भारत यात्रा	जयशंकर. सर्गेई जी–20 विदेश मंत्री बैठक
8 जुलाई	जयशंकर+सर्गेई	जी–20 विदेश मंत्री बैठक इंडोनेशिया	आपसी द्विपक्षीय सहयोग, यूक्रेन और अफगानिस्तान के मुद्दों पर चर्चा
28 जुलाई	जयशंकर+सर्गेई	SCO & विदेश मंत्री बैठक ताशकंद	द्विपक्षीय संबंधों के साथ–साथ समकालीन क्षेत्रीय व अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों पर बातचीत
17–18 अगस्त	एनएसए अजित डोभाल+ निकोलाई पात्रुशेव	अघोषितमास्को यात्रा	द्विपक्षीय संबंधों की प्रगति समीक्षा, अफगानिस्तान, आतंकवाद निरोध, यूक्रेन संघर्ष और खाद्य एवं ऊर्जा सुरक्षा पर बातचीत

16 सितंबर	मोदी+पुतिन	SCO & बैठक उज्बेकिस्तान	द्विपक्षीय सहयोग, वैश्विक व क्षेत्रीय मुद्दों पर चर्चा और यूक्रेन मुद्दे पर कूटनीतिक वार्ता का समर्थन
25 सितंबर	जयशंकर+सर्गेई लेवरोव	77वीं यूएनजीए सम्मेलन (न्यू यार्क)	यूक्रेन मुद्दे को लेकर शांति वार्ता पर चर्चा व सर्गेई द्वारा भारत के यूएनएससी में समर्थन
7–8 नवंबर	IRIGC – TEC- जयशंकर मांदुरोव	मास्को	द्विपक्षीय सहयोग को स्थायित्व प्रदान करने, व्यापारिक लक्ष्यों को प्राप्त करने तथा बाजार पहुँच व व्यापारिक घाटे पर चर्चा
16 दिसंबर	मोदी+पुतिन	टेलीफोन वार्ता	द्विपक्षीय सहयोग की प्रगति पर संतोष वक्त करना और यूक्रेन हालात के बारे में जानना

वर्ष – 2023

दिनांक	शामिल पक्ष	वर्ग	वार्ताएं
07–09 फरवरी	एनएस+पुतिन+ निकोलई पेत्रुशेव	अफगानिस्तान पर सुरक्षा परिषदों के सचिवों/राष्ट्रीयसुरक्षा सलाहकारों की 5वीं बहुपक्षीय बैठक में एनएसए की मास्को यात्रा	अफगानिस्तान में आतंकवाद, क्षेत्रीय व द्विपक्षीय मुद्दों पर व्यापक चर्चा
01–03 मार्च	जयशंकर+सर्गेई लेवरोव	जी20एफएमएम, नई दिल्ली	यूक्रेन संघर्ष, द्विपक्षीय सहयोग और विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर समन्वय बढ़ाने पर चर्चा हुई
06 मार्च	आईआरआईजीसी–टीईसी: जयशंकर+मदुरोव	वर्चुअली बैठक	व्यापार घाटे, बाजार पहुँच मुद्दों सहित द्विपक्षीय संबंधों को और अधिक मजबूत बनाने पर चर्चा
18 अप्रैल	आईआरआईजीसी–टीईसी: जयशंकर+मदुरोव	अंतर– सरकारी आयोग	द्विपक्षीय व्यापार की समीक्षा के

		की 24वीं सत्र, दिल्ली	साथ भारत–रूस व्यापार वार्ता आयोजित किया गया
28 अप्रैल	राजनाथ सिंह +सर्गेई के शोइगु	एससीओ– रक्षा मंत्रियों की बैठक, नई दिल्ली	सैन्य संबंधों, औद्योगिक साझेदारी के साथ–साथ क्षेत्रीय शांति और सुरक्षासंबंधी मुद्दों पर भी चर्चा हुई
04–05 मई	सर्गेई लेवरोव+जयशंकर	एससीओ– विदेश मंत्रियों की बैठक, नई दिल्ली	द्विपक्षीय सहयोग पर सामान्य चर्चा
01 जून	सर्गेई लेवरोव+जयशंकर	ब्रिक्स– विदेश मंत्रियों की बैठक, दक्षिण अफ्रीका	द्विपक्षीय संबंधों पर सामान्य वार्ता के साथ बहुध्रुवीय व्यवस्था का पुरजोर समर्थन
30 जून	नरेंद्र मोदी+पुतिन	टेलीफोन वार्ता	द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और वैश्विक मुद्दों पर चर्चा के साथ तत्कालीन घटनाओं के बारे में जानकारी आदान प्रदान की गई
23 अगस्त	विदेशमंत्री जयशंकर+सर्गेई लेवरोव	ब्रिक्स शिखर सम्मेलन, दक्षिण अफ्रीका	द्विपक्षीय संबंधों के साथ विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर आपसी सहयोग पर चर्चा की
28 अगस्त	नरेंद्र मोदी+ब्लादिमीर पुतिन	टेलीफोन वार्ता	आपसी सहयोग की समीक्षा,तथा वैश्विक समस्याओं पर चिंता वक्त की
26 दिसंबर	IRIGC-TEC जयशंकर+मंटूरोव, जयशंकर+लेवरोव, जयशंकर+पुतिन	जयशंकर मास्को यात्रा	अर्थव्यवस्था, ऊर्जा, रक्षा और तकनीकी क्षेत्रों पर व्यापक चर्चा

वर्ष – 2024

दिनांक	शामिल पक्ष	वर्ग	वार्ताएं
15 जनवरी	पीएएम–नरेंद्र मोदी+ राष्ट्रपति पुतिन	टेलीफोन वार्ता	आपसी द्विपक्षीय संबंधों की दिशस में हुई सकारात्मक प्रगति की समीक्षा और क्षेत्रीय व वैश्विक मुद्दों पर चर्चा

24 अप्रैल	राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजित डोभाल+निकोलाई पेत्रुशेव	सुरक्षा पर उच्च पदस्थ अधिकारियों की 12वीं अंतर्राष्ट्रीय बैठक, मास्को	आतंकवाद मुद्दे पर चर्चा
08 जुलाई	पीएएम–नरेंद्र मोदी+ राष्ट्रपति पुतिन	22वीं भारत–रूस वार्षिक शिखर सम्मेलन	विभिन्न सहयोगात्मक क्षेत्रों (राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक पर्यावरण, सैन्य) पर व्यापक चर्चा व समझौता

रूस यूक्रेन युद्ध के दौरान भारत की विदेशनीति व कूटनीति सफलता

विदेशनीति का संबंध किसी देश की उस नीतियों से होता है जिसका अनुसरण कर एक राष्ट्र अपने राष्ट्रीय हित की पूर्ति व विभिन्न देशों के साथ अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का निर्धारण करता है राष्ट्रीय हित ही वह तत्व है जो विदेशनीति का स्वरूप तय करती है।भारत अपने राष्ट्रीय हित के अनुसार अपने विदेश नीति को तय करता आया है। कुछ सिद्धांतों भारत के विदेश नीति के रीढ़ है जैसे पंचशील सिद्धांत, अहिंसा, शांति व सुरक्षा, उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद का विरोध, गुटनिरपेक्षता आदि। भारत इस युद्ध के दौरान अपने राष्ट्रीय हित को प्राप्त करने और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के बीच संतुलन बनाए रखने के लिए निम्न विदेशनीतियों का अनुसरण किया

तटस्थता की नीति – भारत तत्कालीन परिस्थितियों को ध्यान रखकर तथा रूस के साथ अपने कूटनीतिक संबंधों को निभाते हुए तटस्थता की नीति अपनाई। इस नीति का पालन भारत शीत युद्ध के दौरान किया था जब पूरा विश्व दो गुटों में बंटा हुआ था। अमेरिका सहित कई पश्चिमी देश जब भारत से यह उम्मीद करती रही कि वह रूस के इस अमानवीय व्यवहार की आलोचना करे और संयुक्त राष्ट्र संघ में यूक्रेन के पक्ष में पारित प्रस्ताव के समर्थन में वोट करे तब भारत इस मुद्दे पर अपना तटस्थ रुख अपनाकर रूस के खिलाफ पारित प्रस्ताव पर ना तो तो मतदान किया और ना ही रूस की आलोचना की

बहु–संरेखण की नीति – भारत रूस और पश्चिमी देशों के साथ अपने संबंध को प्रगाढ़ करने के लिए संतुलनकारी विदेशनीति को अपना रहा है क्योंकि अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था में ना तो कोई स्थायी शत्रु है और ना ही कोई स्थायी मित्र यदि कुछ स्थायी है तो वह राष्ट्रीय हित। भारत अपने दीर्घकालिक राष्ट्रीय हितों को प्राप्त करने के लिए किसी भी देश के साथ अपने संबंधों को दांव पर नहीं लगा सकता। भारत को पश्चिमी देश यूक्रेन मामले पर घेरने तथा अपने पक्ष में करने की कोशिश रही है लेकिन भारत इन दबाव के बावजूद रूस के साथ अपने रणनीतिक साझेदारी सहयोग संबंधों को बनाए रखा हुआ है साथ ही भारत सामरिक साझेदारी के माध्यम से अमेरिका के साथ भी अपने संबंधों को मजबूत कर रहा है। यह नीति भारत को सामरिक स्वायत्तता के अनुपालन में मददगार साबित हुई

सामरिक स्वायत्तता की नीति – सामरिक स्वायत्तता की नीति भारत की कूटनीतिक सफलता का परिचायक है। रूस यूक्रेन युद्ध के दौरान दिल्ली में आयोजित जी20 शिखर सम्मेलन रूस विरोधी मंच ना बने इसके लिए भारत ने इस बैठक का रुख अफ्रीकी संघ की तरफ मोड दिया, अफ्रीकी संघ को जी20 में स्थायी सदस्यता दिलाने के प्रयास ने भारत का अफ्रीकी देशों के साथ संबंधों को मजबूत कर दिया। भारत ने एक तीर से दो तरफ निशाना लगाया एक तरफ रूस से अपनी दोस्ती निभाई तो दूसरी तरफ पश्चिमी और अफ्रीकी देशों के साथ अपने संबंधों को मजबूत किया। इस सम्मेलन में भारत ने अपनी क्षमता का प्रदर्शन करते हुए रूस व पश्चिमी देशों के साथ अपने रणनीतिक संबंधों को मजबूत करने एवं वैश्विक जैव ईधन गठबंधन तथा भारत–मध्य पूर्व–यूरोप आर्थिक गलियारा जैसे मुद्दों पर सर्वसम्मत सहमति प्राप्त करने और एक संयुक्त विज्ञप्ति जारी कराने में सफलता भी हासिल की जो अभी तक संभव नहीं हो पाया था।

ऑपरेशन गंगा –रूस यूक्रेन युद्ध में फंसे भारतीय को सुरक्षित अपने देश वापसी के लिए भारत सरकार ने ऑपरेशन गंगा चलाया जिसके लिए वहाँ के राष्ट्राध्यक्ष से निरंतर टेलीफोन वार्ताएं जारी रखा साथ ही भारत के प्रधानमंत्री रूस के राष्ट्राध्यक्ष से बात किया कि इस ऑपरेशन की सफल होने तक दो दिन के लिए युद्ध रोक दे ताकि वहाँ फंसे भारतीय नागरिकों को सुरक्षित अपने देश वापस लाया जा सके, रूस और यूक्रेन के इस मदद से भारत लगभग 20000 छात्रों को सुरक्षित अपने देश लाने में कामयाब रहा, इसे भारत के कूटनीतिक जीत के तौर पर देखा जा सकता है।

प्रतिबंधों के बीच व्यापार प्रगति – पश्चिमी देशों के दबाव के बावजूद भारत और रूस के मध्य द्विपक्षीय व्यापार 2021 में निर्धारित 30 बिलियन अमेरिकी डॉलर के लक्ष्य को पार कर गया इस व्यापार प्रगति और उच्च स्तर तक ले जाने के लिए 22 वें शिखर सम्मेलन के माध्यम से द्विपक्षीय व्यापार को 100 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक ले जाने का लक्ष्य रखा गया। इस युद्ध के दौरान भारत भारी मात्रा में रूस से कच्चे तेल आयात किया जो यह दर्शाता है कि भारत एक संप्रभु राष्ट्र के रूप में अपने राष्ट्रीय हित को ज्यादा महत्व देता है वह किसी देश के छत्रछाया में अपने विदेशनीति को तय नहीं करता है, यह भी भारत के एक कूटनीतिक जीत के तौर पर देखा जा सकता है

रूस यूक्रेन युद्ध पर भारत के दृष्टिकोण तथा शांति स्थापना के लिए भारत के प्रयास

भारत भले ही रूस की खुलेआम आलोचना करने से कतराता रहा और संयुक्त राष्ट्र संघ में हुए मतदान से अपने आप को तटस्थ रखा लेकिन वह इस कदम के प्रति उदासीन रहा। वर्ष 2022 और 2023 में भारत–रूस वार्षिक शिखर सम्मेलन आयोजित ना होना इस युद्ध का ही परिणाम है मार्च 2023 में रूस के राष्ट्रपति पुतिन द्वारा सुरक्षा परिषद में लाए गए प्रस्ताव पर भारत के समर्थन की उम्मीद किया तो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इससे अपने आप को अलग कर लिया भारत का यह कदम दर्शाता है कि वह कभी भी युद्ध का समर्थक देश नहीं रहा है भारत पूरे विश्व को एक परिवार मानता है। अगस्त 2023 में रूसी सेना द्वारा जब बूचा में यूक्रेन के नागरिकों की हत्या की

गई तो भारत के प्रधानमंत्री इसकी आलोचना की और अंतर्राष्ट्रीय जांच का प्रस्ताव रखा। भारत एक गाँधीवादी देश है जो हिंसा का समर्थन नहीं करता है हालांकि भारत रूस के द्वारा किए गए हमले का खुलकर विरोध तो नहीं किया लेकिन शांति स्थापना के लिए दोनों देशों से निरंतर वार्तालाप जारी रखा। 22 फरवरी 2022 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से टेलीफोन के जरिए यूक्रेन मुद्दे पर बात करते हुए अपील किए कि युद्ध किसी भी समस्या का स्थायी समाधान नहीं है अपितु यह जन संहार को अवश्य बढ़ावा देता है इसे तत्काल प्रभाव से समाप्त करने के लिए यूक्रेन के साथ द्विपक्षीय बैठक करना चाहिए इसी दिशा में प्रधानमंत्री मोदी यूक्रेन के राष्ट्रपति जेलेन्सकी को उपर्युक्त बातों को समझाने का प्रयास किया। अक्टूबर 2022 में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह सर्गेई शोइगु से टेलीफोन पर बात करते हुए कहा की "परमाणु या रेडियॉलॉजिकल हथियार का प्रयोग युद्ध में करना बुनियादी सिद्धांतों के खिलाफ है" **(आलेक्सई जखारोव, पृष्ठ–14)** भारत संयुक्त राष्ट्र चार्टर और अंतर्राष्ट्रीय कानूनों में अपनी आस्था व्यक्त करते हुए कहा कि किसी देश के लिए सबसे महत्वपूर्ण तत्व राष्ट्रीय हित है लेकिन इस हित के आड़ में किसी देश के संप्रभुता व क्षेत्रीय अखंडता व मानवाधिकार का उल्लंघन करना अंतर्राष्ट्रीय कानूनों के विपरीत है, पूरे विश्व के देशों को एक दूसरे के क्षेत्रीय अखंडता व संप्रभुता का सम्मान करना चाहिए और किसी भी विवाद व मतभेद को समाप्त करने हेतु सुलह, समझौता और आपसी कूटनीतिक वार्ता का ही रास्ता अपनाना चाहिए भारत की दृष्टिकोण में रूस और यूक्रेन को इन कठिन परिस्थिति में कूटनीतिक वार्ता के माध्यम से शांतिपूर्ण समाधान ढूँढने का प्रयास करना चाहिए भारत के नजरों में सभी देशों को युद्ध विराम के बजाय युद्ध के कारणों का पता लगाकर उसके समाधान पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। क्योंकि युद्ध व संघर्ष से ज्यादा मानवाधिकार महत्वपूर्ण है इसी को ध्यान में रखते हुए भारत ने किसी देश को हथियार देने के बजाय मानवीय राहत और सहायता सामग्री प्रदान करने की दिशा में कदम उठाया और यूक्रेन को लगातार आवश्यक सामग्री के रूप में चिकित्सा आपूर्ति, डीजल, जनरेटर सेट के साथ पुनर्निर्माण व नवीनीकरण के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करने की कोशिश की जापान में हुए **जी7 शिखर सम्मेलन में प्रधानमंत्री मोदी यूक्रेन के राष्ट्रपति जेलेन्सकी से व्यक्तिगत तौर पर बातचीत करते हुए कहा कि "यूक्रेन युद्ध दुनिया में एक संकट बना हुआ है' 'मैं सिर्फ इसे अर्थव्यवस्था या राजनीति की दृष्टि से संकट नहीं मानता मेरे लिए यह मानवता का संकट है" (जे एम स्मिथ)** भारत इस युद्ध के समाधान के लिए जो कुछ कर पाएगा, वह करेगा **सितंबर 2022 में हुए संघाई सहयोग संगठन के बैठक में नरेंद्र मोदी ब्लादिमीर पुतिन से वार्तालाप करते हुए कहा कि "आज का युग युद्ध का युग नहीं है हमें शांति के मार्ग को अपनाने की आवश्यकता है"** मोदी के इस कथन को जी20 शिखर सम्मेलन में काफी सराहना की गई और इसे अपनाया भी गया। **(जेफ एम एमिथ)**

भारत के लिए रूस की महत्ता –

जब अमेरिका सहित पूरे पश्चिमी देश यूक्रेन मामले को लेकर रूस की आलोचना कर रहा था तो भारत खामोशी से अपने राष्ट्रीय हित को निशाना बनाया और युद्ध का विरोध करते हुए युद्धरत रूस का साथ दिया भारत

रूस से भारी मात्रा में कच्चे तेल आयात करके रूसी अर्थव्यवस्था और वैश्विक बाजार को कुछ हद तक स्थिरता प्रदान किया। भारत–रूस के सौहार्दपूर्ण संबंधों के पीछे ऐतिहासिक कारण तो है लेकिन वर्तमान कारण भी मौजूद है जो भारत को रूस के इतने करीब ले जाता है। वर्तमान समय में खालिस्तानी समर्थक अमेरिका जैसे कई देश अमेरिका और कनाडा भारत केभारत को सिर्फ एक टूल की तरह इस्तेमाल करने वाले देश है फिर चाहे वह चीन के विरुद्ध हो या भारतीय क्षेत्रीय संप्रभुता और अखंडता का उल्लंघन किया को प्रभावित करने के उद्देश्य से खालिस्तानी आतंकवादी समर्थक गुरूपतवंत सिंह पन्नु जो अमेरिका को अपने देश में रहकर भारत के पंजाब राज्य को खालिस्तान बनाना चाहता है, उसके समर्थन में अमेरिकी सरकार पन्नु के हत्या के साजिश का आरोप भारत पर लगाती है जिससे शरण देने को लेकर होके क्षेत्रीय अखंडता प्रभावित ऐसे परिप्रेक्ष्य में भारत को अमेरिका जैसे देशों को प्रति–संतुलित करने के लिए रूस जैसा मित्र अपरिहार्य हो जाता है क्योंकि रूस ही वह एकमात्र देश है जो भारत के हर उम्मीद पर खरा उतरा है इस संबंध में विदेशमंत्री जयशंकर कहते है कि "अगर मैं स्वतंत्रता के बाद भारत के इतिहास को देखता हूँ तो रूस ने कभी भी हमारे हितों को नुकसान नहीं पहुंचाया" (राजोर्शी राय)

विशेषाधिकार रणनीतिक साझेदार – रूस भारत का विशेष और विशेषाधिकार प्राप्त रणनीतिक साझेदार है जो इन दोनों के द्विपक्षीय संबंधों को उच्च स्तर तक ले जाता है भारत और रूस दोनों राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और तकनीकी क्षेत्र में एक दूसरे के साथ सहयोग करते है तकनीकी क्षेत्र में रूस ने भारत की जिस हद तक मदद किया उतना किसी और देश ने आज तक नहीं किया।

सीमा सुरक्षा – रूस, चीन और पाकिस्तान की बढ़ती नजदीकियाँ भारत के लिए घातक साबित हो सकता है यदि भारत रूस संबंध खराब हुए तो इससे सबसे ज्यादा फायदा चीन और पाकिस्तान को होगा यह दोनों मिलकर संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत के किसी भी मामले में रूस को अपनी तरफ कर सकते है और बीजिंग भारत को नए उपकरण स्पेयर पार्ट्स और सर्विसिंग प्रदान करने वाले रूसी नीतियों को प्रभावित कर सकता है साथ ही भारत के दोनों पड़ोसी देश चीन और पाकिस्तान परमाणु संपन्न देश है जो स्थायी रूप से भारतीय अस्तित्व के लिए खतरा बना हुआ है भारत सरकार का मानना है कि वह वैश्विक व्यवस्था में अलग–थलग पड़े रूस के साथ सार्वजनिक मतभेद पैदा कर अपने सीमा सुरक्षा को खतरे में नहीं डाल सकता।

रूस के रक्षा उपकरण पर निर्भरता – रूस एक मात्र वह देश है जिसने भारत को उन्नत प्रकार के रक्षा उपकरण आयात करने तथा ब्रह्मोस जैसी क्रूज मिसाइल को संयुक्त रूप से विकसित करने के लिए तैयार है भारत रूस के सहयोग से ही हथियारों के स्वदेशीकरण करने में सफलता हासिल कर रहा हैजो यह दर्शाता है कि भारत और रूस के रक्षा संबंध क्रेता विक्रेता के इतर संयुक्त अनुसंधान, डिजाइन विकास और अत्याधुनिक हथियारों के निर्माण के उच्च स्तर तक पहुँच गया है हालांकि इस युद्ध के दौरान इन लक्ष्यों को पूरा करने में रुकावट आ रही है एसआईपीआरआई के आकड़ों के अनुसार 2018–22 के अवधि में भारत ने रूस से 31: रक्षा उपकरण आयात किया

जोकि तुलनात्मक रूप से पिछले दस वर्षों के अपेक्षाकृत कम आयात हुआ है फिर भी वर्तमान समय में रूस भारत के लिए सबसे बड़ा रक्षा आपूर्तिकर्ता देश बना हुआ है

बहु–ध्रुवीयता का समर्थक – भारत और रूस दोनों बहु ध्रुवीय वैश्विक व्यवस्था के समर्थक है क्योंकि भारत और रूस दोनों अमेरिकी प्रभुत्व को स्वीकार नहीं करते है। शीत युद्ध समाप्ति के बाद से अमेरिका का हर क्षेत्र में बढ़ते प्रभाव ने रूस और भारत के हितों को प्रभावित किया एक ध्रुवीय विश्व को बहुध्रुवीयता में बदलने के लिए रूस और भारत मिलकर कई संस्थाओं (एससीओ,ब्रिक्स और आरआईसी) और उभरती हुई शक्तियों के साथ तालमेल बिठाकर अमेरिका को संतुलित करने का प्रयास करते है

आतंकवाद – आतंकवाद से ना सिर्फ भारत और रूस प्रभावित है बल्कि पूरा विश्व किसी ना किसी क्षेत्र में प्रभावित है भारत और रूस मिलकर आतंकवाद से निपटने के लिए आतंकवादियों के सीमा पार आवागमन, वित्तपोषण और पनाह देने वाले के प्रति कड़ा रुख अपनाने के लिए सहमत है भारत चारों तरफ से आतंकवाद से घिरा हुआ है इससे निपटने के लिए भारत रूस का समर्थन हासिल करना चाहता है क्योंकि हाल ही में रूस भी आतंकवाद के चपेट में आया जिसकी भारत ने कड़ी निंदा की। भारत और रूस दोनों अपने द्विपक्षीय एजेंडे में आतंकवाद का मुद्दा भी शामिल किए हुए जिस पर प्रतिवर्ष चर्चा होती है

मध्य एशिया और भारत – मध्य एशिया में चीन के बढ़ते निवेश भारत के मध्य एशिया तक पहुँच के रास्ते रुकावट बन सकता है जिसको मद्देनजर रखते हुए भारत और रूस मिलकर अंतर्राष्ट्रीय उत्तर दक्षिण परिवहन परियोजना का निर्माण कर रहे है जो भारत को मध्य एशिया और यूरेशिया तक पहुचनें में मदद करेगी आईएनएसटीसी को चाबहार बंदरगाह से भी जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है यह कनेक्टिविटी मध्य एशिया के भी किसी एक पर निर्भरता को कम करेगा और अपने संबंधों में विविधता लाने के लिए अवसर प्रदान करेगा। इसे भारत चीन के वन बेल्ट वन रोड परियोजना के प्रतिक्रिया स्वरूप विकसित कर रहा है

भारत के समक्ष अवसर –

भारत आजादी के बाद से ही विश्व गुरु बनने का सपना देखा इसके लिए पहला कदम – विकासशील देशों का प्रतिनिधित्व गुटनिरपेक्ष आंदोलन के माध्यम से करना शुरू कर दिया था लेकिन भारत लंबे समय तक मात्र एक शक्ति बनकर रहा लेकिन अब परिस्थितियाँ बदल गई है जहां ना सिर्फ भारत को विश्व–पटल पर अपने विचार रखने का मौका मिलने लगा अपितु वह अपने विचारों से दुनिया को प्रभावित भी करने लगा भारत अपने पड़ोसी देशों के गंभीर चुनौतियों के बावजूद अपने अर्थव्यवस्था को उच्च स्तर तक पहुंचा कर विश्व की सबसे बड़ी पाँचवी अर्थव्यवस्था बन गया। जहां भारत के पड़ोसी देश अपने राजनीतिक अस्थिरता से लड़ रहे है वहीं भारत आजादी के बाद से ही लगातार लोकतान्त्रिक व्यवस्था को बनाए रखने में कामयाब रहा। दुनिया के नजर में वसुधैव कुटुंबकम पथ पर चलने वाला देश भारत विश्व में शांति कायम रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है ऐसा विश्वास लोगों

के मन में तब आया जब पूरा विश्व रूस यूक्रेन युद्ध के संकटों का सामना कर रहा है, हर देश चाहता है की वह इस युद्ध को लेकर कोई ना कोई मध्यस्थ सुझाव अवश्य दे ताकि विश्व में फिर से शांति बहाल की जा सके। माना जाता है कि इसके पीछे भारत रूस की दोस्ती है जिससे पूरे विश्व का ध्यान भारत की ओर चला गया, वजह जो भी हो लेकिन भारत को यह एक ऐसा अवसर प्रदान किया कि वह विभिन्न मुद्दों पर अपने विचार रखे। जैसा कि भारत ने प्रयास भी किया कि रूस का कहीं विरोध किए बिना युद्ध से होने वाले नुकसान के बारे में विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर अपने विचार को रखा, यह अपने आप में सरहनीय है।

2023 में यूक्रेन के विदेश मंत्री भारत यात्रा की इन्होंने ने कहा कि "हम इस धरती पर आकर खुश है जिसने कई संतों और गुरुओं को जन्म दिया आज भारत विश्व गुरु, वैश्विक शिक्षक और मध्यस्थ बनने के लिए तैयार है इसलिए यूक्रेन का समर्थन करने में ही विश्वगुरु का एकमात्र सही फैसला होगा" **(विनय कौरा)** रूस के राष्ट्रपति पुतिन भारत की प्रशंसा करते हुए कहा कि **"भारत एक बहुत प्रभावशाली वैश्विक खिलाड़ी है हम भारत से एक उचित निर्णय की मांग कर रहे है, प्रधानमंत्री मोदी दुनिया के सबसे शक्तिशाली और सम्मानित व्यक्तियों में से एक है"(वोरा धार्मिक प्रकाशकुमार)**। 22वां भारत–रूस शिखर सम्मेलन पर दुनिया की नजरे टिकी हुई थी कि भारत शांति कायम करने के लिए रूस से वार्तालाप करके इस युद्ध के समाप्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा, जैसा की **अमेरिकी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता मैथ्यू मिलर के कहा कि "हम भारत से आग्रह करते है कि वह संयुक्त राष्ट्र चार्टर के सिद्धांतों के आधार पर यूक्रेन की क्षेत्रीय अखंडता और उसकी संप्रभुता को बनाए रखने के लिए यूक्रेन में स्थायी और न्यायपूर्ण शांति स्थापित करने में हमारी कोशिश का समर्थन करेंगे"। (बीबीसी न्यूज 11 जुलाई 2024)** इन सभी देशों के उम्मीद को अंतर्दृष्टि में रखते हुए भारत किस दिशा में कदम उठाएगा यह आने वाले भविष्य पर निर्भर करेगा लेकिन अब तक भारत बहु–संरेखण व सामरिक स्वायत्तता की नीति अपनाकर शांति स्थापना के लिए कूटनीतिक वार्तालाप को महत्व दिया जो रूस यूक्रेन को अपने द्विपक्षीय विवादों के समाधान के लिए अपनाना चाहिए।

भारत के समक्ष चुनौतियाँ –

रूस यूक्रेन हमले के बाद पश्चिमी देशों ने रूस पर आर्थिक प्रतिबंध लगाकर वैश्विक स्तर पर अलग थलग करने की कोशिश की क्योंकि पश्चिमी देशों मानते है कि रूस यूक्रेन पर एकतरफा हमला कर उसके संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता को नुकसान पहुंचाया है जो अंतर्राष्ट्रीय कानूनों व संयुक्त राष्ट्र संघ चार्टर के खिलाफ है ऐसे परिस्थिति में भारत रूस के साथ बिना किसी दबाव के संबंध को बढ़ावा देना भारत के दीर्घकालिक हितों को प्रभावित कर सकता है इस संकट ने भारत के समक्ष कई चुनौतियाँ उत्पन्न कर रही है।

रूस चीन और पाकिस्तान की बढ़ती नजदीकियाँ – इस हमले के बाद रूस और चीन के मध्य व्यापार लगातार वृद्धि कर रही है जिसमें चीन पश्चिमी देशों के दबावों को नजरअंदाज कर रूस से भारी मात्रा में कच्चे तेल आयात

कर रूसी अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान कर रहा है रूस और चीन के बीच हुए "बिना सीमा वाली साझेदारी"(स्मिथ) समझौता भारत के समस्या को और बढ़ा दिया क्योंकि जिस उम्मीद से भारत और चीन के बीच विवाद होने पर रूस को एक कड़ी के रूप देखता था अब वह धूमिल नजर आ रही है। चीन का सबसे करीबी तथा भारत का दुश्मन पड़ोसी देश पाकिस्तान के साथ रूस सैन्य अभ्यास कर उसे सैन्य उपकरण सहायता देकर अपने संबंध मजबूत कर रहा है, इन तीनों का गठजोड़ सुरक्षा की दृष्टि से भारत के लिए खतरा बन सकता है इतना ही नहीं चीन रूस के यूक्रेन हमले का खुलकर समर्थन किया जबकि भारत खामोश रहा यह भी भारत और रूस के रिश्ते को भविष्य में भारत बनाम चीन मामले में कमजोर करेगा। क्योंकि जब ऐसी कोई परिस्थिति बनेगी जिसमें चीन या भारत में से किसी एक का साथ देना है तो रूस भी तटस्थ रहकर खामोश हो जाएगा **जैसा कि 2020 में भारत चीन के मध्य हुई हिंसक झड़प में रूस अनुपस्थित रहा। (स्मिथ)**

रूस बनाम चीन – इस युद्ध ने रूस बनाम चीन में रूस को पीछे छोड़ दिया इसके पीछे का मुख्य कारण रूस पर लगे आर्थिक प्रतिबंध जिससे चीन पर रूस की निर्भरता बढ़ती गई चाहे वह समान को लेकर हो या हथियार को, रूस भारत की अपेक्षा चीन से ज्यादा व्यापार किया जिसकी वजह से रूस कई अंतर–सरकारी संगठनों (ब्रिक्स एस. सी.ओ आर.आई.सी) मे कमजोर होता चला जा रहा है। एस.सी.ओ में भारत को रूस इसलिए शामिल किया था ताकि दोनों मिलकर चीन के मध्य एशिया में बढ़ते प्रभाव को कम कर सके भारत के लिए भी यह एक सुनहरा मौका रहा जिससे वह मध्य एशिया तक अपनी पहुँच को सुनिश्चित कर पाया लेकिन युद्ध में फंसे रूस के घटते प्रभाव और चीन के मध्य एशिया में बढ़ते कदम ने भारत की चिंता को और बढ़ा दिया

भारत की संतुलनकारी नीतियाँ – जब कभी भी भारत के समक्ष ऐसी परिस्थिति आती है तो वह संतुलनवादी विचारधारा को अपनाता है भारत रूस के साथ–साथ पश्चिमी देशों के साथ भी संबंध मधुर बनाने में लगा हुआ है लेकिन जिस तरीके से पश्चिमी देश यूक्रेन मुद्दे पर भारत का समर्थन चाहते है भारत उस पर खरा नहीं उतर रहा है जो भारत और पश्चिम के आपसी संबंध को भविष्य में प्रभावित कर सकता है चीन ना सिर्फ भारत के लिए बल्कि पश्चिमी देशों के लिए भी खतरा बना हुआ है चीन अपने वन बेल्ट वन रोड और मोतियों के माला रणनीति के तहत भारत को चारों तरफ से घेरने की कोशिश रहा है इस दिशा में चीन को प्रति संतुलित करने के लिए क्वाड देशों (भारत आस्ट्रेलिया, अमेरिका, जापान का संगठन) का समर्थन अपरिहार्य हो जाता है लेकिन जिस तरीके से भारत क्वाड के साथ ब्रिक्स, संघाई सहयोग संगठन और रूस चीन इंडिया संगठन (आरआईसी) में संतुलन बनाने की कोशिश कर रहा है इससे कोई ना कोई संगठन भारत के पक्ष में कमजोर हो जाएगा क्योंकि हर संगठन भारत के साथ तालमेल बिठाकर नहीं चल सकता है, इसके पीछे मुख्य कारण रूस और चीन ब्रिक्स, संघाई सहयोग संगठन और आरआईसी को पश्चिमी विरोधी संगठन बनाना चाहते है और क्वाड को नाटो का दूसरा रूप मानते है यह भारत के लिए एक चुनौती बनी हुई है कि वह इनके बीच संतुलन कैसे बनाकर रख पाएगा।

भारत और अमेरिका – शीत युद्ध के बाद बदलते वैश्विक सत्ता समीकरण में भारत और अमेरिका के बीच राजनीतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और सैन्य संबंध मजबूत हुए। सुरक्षा की दृष्टि से चीन और पाकिस्तान को प्रति–संतुलित करने के लिए अमेरिका का साथ अपरिहार्य हो जाता है 2020 गलवान घाटी में हुए हिंसक कार्यवाही को लेकर अमेरिका ने चीन की आलोचना की जबकि रूस खामोस रहा एक और घटना जब चीनी सेना अरुणांचल प्रदेश में घुसपैठ करने की कोशिश कर रही थी तब अमेरिका "कार्यवाही योग्य उपग्रह तस्वीर"भारत को उपलब्ध कराई जिसकी मदद से चीनी मंशा को नकाम करने में सफल रहा, इस लिहाज से रूस और अमेरिका के मध्य संतुलन बनाकर चलना भारत के लिए चुनौती बन रहा है

रक्षा आपूर्ति निर्भरता – भारत आज भी रक्षा उपकरण के मामले रूस पर निर्भर है यह दोनों देशों के मध्य लक्ष्यों में सर्वोपरि है लेकिन रूस यूक्रेन युद्ध की वजह से रूस भारत को रक्षा उपकरण समय से आयात करने में विफल है भारत ने लंबे समय से लंबित रक्षा उपकरण 'Mi–17 V5 मध्यम लिफ्ट हेलिकॉप्टर, के सौदे को रद्द कर दिया साथ ही मिग–29 और 12 सुखोई–30 MKI लड़ाकू विमान को आयात करना स्थगित कर दिया जिससे भारत के रक्षा उपकरण भंडार में कमी आने की संभावना बन रही है। भारत और रूस के बीच हुए आत्म निर्भर भारत के लिए रक्षा आपूर्ति के दृष्टि से मेक इन इंडिया के तहत संयुक्त रूप से उन्नत रक्षा प्रौद्योगिकी को विकसित करने के लिए दोनों देश स्वीकार्य भुगतान संरचना स्थापित करने में भी असफल रहे। वर्तमान समय में रूस भारत की अपेक्षा चीन को काफी उन्नत प्रकार के रक्षा उपकरण उपलब्ध कराने में दिलचस्पी दिखा रहा है जिसकी वजह चीन भारत से आगे निकल गया है रक्षा सामग्री को लेकर रूस पर अपनी निर्भरता कम करने तथा रक्षा उपकरण विविधीकरण के लक्ष्य को पूरा करने के लिए भारत अमेरिका, फ्रांस, इजराइल और दक्षिण कोरिया की तरफ रुख कर रहा है।

निष्कर्ष –

पूरे वैश्विक व्यवस्था में भारत–रूस संबंध सबसे स्थिर अंतर्राष्ट्रीय संबंध माना जाता है भारत–रूस संबंधों के इतिहास देखा जाए तो रूस भारत का सबसे भरोसेमंद मित्र देश है लेकिन ऐतिहासिक घटनाक्रमों को आधार बनाकर राष्ट्रीय हित को नहीं प्राप्त किया जा सकता है इस वैश्विक घटनाक्रमों को समझते हुए भारत रूस के साथ –साथ अन्य देशों से भी अपने संबंधों को मजबूत किया। रूस यूक्रेन संकट में भारत और रूस के राजनीतिक संबंध सकारात्मक दिशा में प्रगति की लेकिन यह सौहार्दपूर्ण संबंध भारत के समक्ष कई चुनौतियाँ भी उत्पन्न की जो आने वाले समय में भारत के राष्ट्रीय हित को खतरा पहुँच सकता है क्योंकि आने वाले समय में आर्थिक और कूटनीतिक रूप से कमजोर रूस के साथ पश्चिम देशों का विवाद और गहरा हो सकता है।फिर भी अभी तक भारत ने अपने विदेश नीति व कूटनीति के माध्यम से राष्ट्रीय हित को सर्वोच्च स्तर तक पहुंचा दिया भारत को अपने राष्ट्रीय हित को और सुरक्षित करने हेतु इन चुनौतियों से निपटने के लिए रक्षा आपूर्ति समस्याओं के समाधान के लिए आत्म निर्भर भारत

नीति के तहत मेक इन इंडिया को निरंतर बढ़ावा देना होगा, चीन और पाकिस्तान जैसे प्रतिद्वंद्वी और आतंकवाद से निपटने के लिए रूस के साथ –साथ पश्चिमी देशों का समर्थन भी जरूरी है

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1. मीना, रामकल्याण. (2022), शीतयुद्ध के बाद भारत–रूस संबंध, शृंखला एक शोधपरक वैचारिक पत्रिका, सोशल रिसर्च फाउंडेशन, वैल्य X, P: ISSN 2321-290X, E: ISSN 2349980X,
2. पांडा, जगन्नाथ, डॉ. (2024), द लिमिट्स ऑफ इंडिया एण्ड रूस ट्रांसेक्सनल रीलैशन, यूनाइटेड स्टेट इंस्टिट्यूट ऑफ पीस
3. जीशान, मोहम्मद. (2024), इंडिया टर्न्स द पेज ऑन टीस विथ रूस आफ्टर यूक्रेन वार, द डिप्लोमेट https://thediplomat-com/2024/01/india-turns-the-page-on-ties-with-russia-after-ukraine-war/
4. स्मिथ, एम, जेफ. (2023), इंडिया, रूस एंड यूक्रेन वार, हेरिटिज फाउंडेशन एशियन स्टडीस सेंटर https://www-heritage-org/global-politics/commentary/india-russia-and-the-ukraine-war#
5. भारत–रूस संबंधों को लेकर अमेरिका की क्या है चिंता. (11 जुलाई 2024) बीबीसी न्यूज –https://www-bbc-com/hindi/articles/cglk3g8gpzmo
6. इंडिया रूस रीलैशन : मोदी पुतिन मीटिंग. (8 जुलाई 2024), आज तक न्यूज– https ://www-aajtakin/world/story/why-isRussia-india-most-trusted-partner-why-are-western-countries-jealous-of-pm-modi-visit-understand-in-facts-putin-ntc-1980216-2024-07-08
7. India-Russiabilateral relation- (June 2024) embassy of India in Moscow,Russia https%//www-google-com/url?sa=t&source=web&rct=j&opi=89978449&url=https://indianembassy-moscow.gov.in/bilateral-relations-india-

russia.php&ved=2ahUKEwirofGw7eqHAXVWQfUHHRmoL6wQFnoECBgQAQ&usg=AOvVaw0VSzZQ2RJHCOINsBL4kRiv

8. भारत रूस यात्रा. (2022–2024), https://indianembassy-moscow-gov-in/visits-php
9. भारत रूस वार्ता प्रेस रिलीज – (2022–2024) https://indianembassy-moscow-gov-in/press&releases-php
10. Visit of minister of foreign affairs of Russian federation to India- (31 march – 1 April 2022) embassy's India in Moscow, Russia https://www-mea-gov-in/pressreleases-htm?dtl/35136/Visit+of+Minister+of+Foreign+Affairs+of+Russian+Federation+to+India+31+March++1+April+2022
11. Visit of external affaire minister to the Russian federation (November -07-08, 2022) embassy's India in Moscow, Russia https://indianembassymoscow-gov.in.Visit%20of%20EAM%20Dr%20S%20Jaishankar%20to%20Moscow-November%207-8-2022-php
12. IRIGC-TEC virtual review meeting (march 6, 2023) https://www-mea-gov-in/pressreleases-htm?dtl/36331/IndiaRussia InterGovernmental Commission on Trade Economic Scientific Technological and Cultural Cooperation IRIGCTEC Virtual Review Meeting
13. लेवरोव होल्डस टॉक विद जयशंकर ऑन टीस, यूक्रेन. (2 मार्च 2023), दी इंडियन एक्सप्रेस, न्यू दिल्ली
14. रक्षा मंत्री एण्ड हिस रूस काउन्टरपार्ट होल्ड बैलेटरल टॉक ओं दी सिडेलीनेस ऑफ एससीओ डिफेन्स मिनिस्टर'मीटिंग इन न्यू दिल्ली (28 अप्रैल 2023), पीआईबी दिल्ली
15. फॉरेन मिनिस्टर सर्गेई लेवरोव टॉक विद जयशंकर. (4 मई 2023), https://mid-ru/en/foreign policy/news/1867101/
16. फॉरेन मिनिस्टर सर्गेई लेवरोव मीटिंग विद मिनिस्टर ऑफ एक्सटर्नल अफेर जयशंकर. (1 जून 2023), https://mid-ru/en/foreign policy/news/1873516/

17. प्राइम मिनिस्टर नरेंद्र मोदी स्पीक विद प्रेसीडेंट पुतिन. (30 जून 3023), https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx\PRID=1936486
18. फॉरेन मिनिस्टर सर्गेई लेवरोव विद मिनिस्टर ऑफ इक्स्टर्नल अफेर ऑफ दी इंडिया जयशंकर, जोहनसबर्ग (23 अगस्त 2023) https://mid.ru/en/foreign policy/news/1901391/
19. Visit of external affairs minister Dr S- Jaishankar(December 25-29) 2023 https://www-mea-gov-in/pressreleases.htm?dtl/37489/Visit of External Affairs Minister Dr S Jaishankar to Russia December 25-29-2023
20. 22वें भारत–रूस वार्षिक शिखर सम्मेलन के बाद संयुक्त वक्तव्य.(2024),पीआईबी दिल्ली – https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2033085
21. प्राइम मिनिस्टर स्पीक विद प्रेसीडेंट ऑफ दी रूस फेडरैशन (28 अगस्त 2024) https://www.mea.gov.in/pressreleases.htm?dtl/37056/Prime Minister speak with President of the Russian Federation
22. बोम्माकान्ति, कार्तिक. (2024), भारत–रूस संबंधः रणनीतिक स्वायत्तता और कमजोरी का संतुलन, ऑब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन (ओ.आर.एफ)
23. वर्मा, राज. (2023), इंडियास क्वेस्ट फॉर सिक्युरिटी एण्ड इट्स नेचुरालिटी इन द रूस यूक्रेन वार, द राउन्ड टेबल– द कॉममोनवेल्थ जनरल ऑफ इंटरनेशनल अफेयर्स, वैल्यूम 112, N 1, 14–26
24. कौर, विनय. (2023), इंडियास राइज एज ए पावरः केस स्टडी ऑफ यूक्रेन–रूस वार, politico ISSN (P): 2322-0686, E: 25582-905X VOL.15, NO. 1-2, PP 64-73, पृष्ठ– 5
25. प्रकाशकुमार, धार्मिक, वोरा. (2024), रूस यूक्रेन कॉन्फ्लिक्ट, ए ग्लोबल जर्नल ऑफ इन्टरडिसिप्लिनरी स्टडीस (ग्रांड अकेडमिक पोर्टल रिसर्च जर्नल), ISSN 2581-5628 पृष्ठ – 4
26. मरजानी, निरंजन. (7 जुलाई 2024), ह्वाइ इंडियास एंगेजमेंट्स विद रूस मैटर, इंडिया टाइम्स https://www.heritage.org/global-politics/commentary/india-russia-and-the-ukraine-war#

27. वॉरेन, ए, स्पेन्सर, गांगुली, सुमित. (2022), इंडिया–रूस रीलैशन आफ्टर यूक्रेन, यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया, VOL. 62, NO. 5-6, PP. 811-837
28. रॉय, राजोर्शी. (2024), नेविगेटिंग द इंडिया–रूस स्ट्रटीजिक पार्ट्नर्शिप, एमपी–आईडीएसए, पृष्ठ – 3
29. सिंह, सरिता, डॉ. (2022), भारत–रूस संबंध में चीनः एक विवेचन, ए कॉर्टर्ली पीर रिव्यूड जर्नल फॉर सोशल साइंस एण्ड हुमैनिटीज, वैल्यूम– 3, Issue-15, ISSN (O)- 2582-1296
30. दास, अंकिता, मिस. (2019), इंडिया–रूस रीलैशन एमर्जिंग वर्ल्ड ऑर्डर, स्कॉलरली रिसर्च जर्नल फॉर यूमैनिटी साइंस एण्ड इंग्लिश लैंग्वेज, अनलाइन ISSN-2348-3083 वाल्यूम– 8
31. मोहन, राजा, सी. (2024), रूस इन इंडियास ग्रेट पावर डिप्लोमसी, इंस्टिट्यूट ऑफ साउथ एशियन स्टडीस, नैशनल यूनिवर्सिटी ऑफ सिंगापुर
32. जखारोव, आलेक्सई. (2024), इंडिया–रूस रीलैशन इन ट्रबल्ड टाइम्स स्टेडी बट स्टेनटिंगएएसआइई, विजन, न. 140, ईएफआरआई, पृष्ठ–8, 14